भारत सरकार
आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2100

12 दिसम्बर, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

वैश्विक मंचों पर आयुष अनुसंधान

2100. श्री राधेश्याम राठिया:
श्रीमती महिमा कुमारी मेवाड़:
श्री विनोद लखमशी चावड़ा:
श्री भरतसिंहजी शंकरजी डाभी:
श्री विजय कुमार दूबे:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) पारंपरिक चिकित्सा और समग्र स्वास्थ्य से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की भागीदारी का ब्यौरा क्या है;

(ख) आयुष आधारित अनुसंधान को वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत करने के क्या उद्देश्य हैं;

(ग) क्या उक्त मंचों पर संयुक्त अनुसंधान, नैदानिक अवलोकन या क्षमता निर्माण के लिए कोई प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) सरकार आयुष सेवाएं प्रदान करने, सुरक्षा निगरानी करने और वैज्ञानिक साक्ष्य प्रकाशित करने के लिए किस प्रकार सांस्कृतिक और अंतर-पारंपरिक साझेदारी की संभावना तलाश रही है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (घ): आयुष मंत्रालय 'आयुष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु संवर्धन के लिए केंद्रीय क्षेत्र की योजना (आईसी योजना) कार्यान्वित कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत आयुष मंत्रालय भारतीय आयुष औषधि विनिर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को आयुष उत्पादों एवं सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सहायता प्रदान करता है; आयुष चिकित्सा पद्धति के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार, विकास तथा मान्यता को सुदृढ़ करता है, अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर हितधारकों के बीच संवाद एवं आयुष के बाज़ार के विकास को प्रोत्साहित करता है, विदेशों में आयुष अकादमिक पीठ की स्थापना के माध्यम से शिक्षाविदों और अनुसंधान को बढ़ावा देता है, प्रशिक्षण कार्यशालाओं/संगोष्ठियों के आयोजन आदि के माध्यम से आयुष चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जागरूकता एवं रुचि को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देता है। आईसी योजना के माध्यम से आयुष मंत्रालय विदेशों की प्रतिष्ठित संस्थाओं/विश्वविद्यालयों, अंतर्राष्ट्रीय ऐजेंसियों तथा संयुक्त राष्ट्र की संस्थाओं–जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के साथ आयुष संबंधी अनुसंधान एवं विकास/शिक्षण तथा अन्य सहयोगात्मक कार्यक्रमों को भी प्रायोजित करता है।

आयुष मंत्रालय ने डब्ल्यूएचओ के साथ निम्नलिखित सहयोग किया है:-

- गुजरात के जामनगर में डब्ल्यूएचओ -ग्लोबल ट्रेडिशनल मेडिसिन सेंटर (जीटीएमसी) की स्थापना के लिए डब्ल्यूएचओ के साथ एक समझौता किया है। इस केंद्र का उद्देश्य डब्ल्यूएचओ की पारंपरिक चिकित्सा कार्यनीति (2014-23) के क्रियान्वयन में सहयोग प्रदान करना तथा देशों को ऐसी नीतियाँ और कार्य योजनाएँ विकसित करने में सहायता देना है, जो सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में उनकी यात्रा में पारंपरिक चिकित्सा की भूमिका को सशक्त बनाएँ। भारत, डब्ल्यूएचओ-जीटीएमसी जैसी पहलों के माध्यम से पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में स्वयं को वैश्विक नेता के रूप में स्थापित कर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से स्थापित यह केंद्र पारंपरिक चिकित्सा के संवर्धन एवं अनुसंधान की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह वैश्विक स्तर प्रमाण-आधारित पारंपरिक, पूरक और एकीकृत चिकित्सा (टीसीआईएम) से संबंधित ज्ञान के, प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह विश्व स्तर पर पारंपरिक चिकित्सा के लिए स्थापित किया गया वैश्विक बाह्य केंद्र (कार्यालय) है, जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:
  - ❖ दुनिया भर में पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) पद्धतियों को स्थापित करना।
  - ❖ पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित वैश्विक स्वास्थ्य मामलों पर नेतृत्व प्रदान करना।
  - ❖ पारंपरिक चिकित्सा की गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता, पहुंच और तर्कसंगत उपयोग सुनिश्चिता।
  - ❖ डेटा एकत्र करने, विश्लेषण करने और प्रभाव का आकलन करने के लिए उपकरण और कार्यप्रणालियों में संबंधित तकनीकी क्षेत्रों में मानदंड, मानक और दिशानिर्देश विकसित करना। डब्ल्यूएचओ पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) सूचना केंद्र का परिकल्पित उद्देश्य मौजूदा पारंपरिक चिकित्सा (टीएम) डाटा बैंक, वर्चुअल पुस्तकालयों तथा शैक्षणिक और शोध संस्थानों का एक सहयोगात्मक समूह तैयार करना है।
  - ❖ उद्देश्यों से संबंधित क्षेत्रों में विशिष्ट क्षमता-विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना तथा परिसर-आधारित, आवासीय या वेब-आधारित और डब्ल्यूएचओ अकादमी तथा अन्य रणनीतिक साझेदारों के साथ साझेदारी के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना ।

- आयुर्वेद तथा यूनानी के प्रशिक्षण और अभ्यास हेतु बेंचमार्क दस्तावेज़ वर्ष 2022 में प्रकाशित किया गया, जो दिनांक 13 मई, 2016 को डब्ल्यूएचओ के साथ हस्ताक्षरित प्रोजेक्ट कोलैबोरेशन एग्रीमेंट का परिणाम है।

- आयुर्वेद, यूनानी और सिद्धा में टर्मिनोलॉजी दस्तावेज़ डब्ल्यूएचओ द्वारा प्रकाशित किया गया, जो पारंपरिक और पूरक चिकित्सा को स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में एकीकृत करने संबंधी डब्ल्यूएचओ और आयुष मंत्रालय के बीच हुए प्रोजेक्ट कोलेबोरेशन एग्रीमेंट का परिणाम है।

- आयुष मंत्रालय और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के बीच दिनांक 24 मई, 2025 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य हस्तक्षेप वर्गीकरण (आईसीएचआई) के लिए पारंपरिक चिकित्सा हस्तक्षेप श्रेणियाँ तथा सूचकांक विकसित करना है, जिसमें समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है और आयुर्वेद, सिद्ध तथा यूनानी की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। यह समझौता अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य हस्तक्षेप वर्गीकरण (आईसीएचआई) के अंतर्गत एक समर्पित पारंपरिक चिकित्सा मॉड्यूल पर कार्यारंभ का संकेत देता है।यह प्रगति भारत की उस दृष्टि के अनुरूप है, जिसमें पारंपरिक ज्ञान की अपनी समृद्ध विरासत को वैज्ञानिक वर्गीकरण और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल की मुख्यधारा में लाना सम्मिलित है।

- इसके अलावा, आयुष मंत्रालय ने विदेशों के साथ पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए 25 देश-दर-देश समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, विदेशों में आयुष अकादमिक पीठ की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ 15 समझौता ज्ञापन, सहयोगी अनुसंधान/शैक्षणिक सहयोग के लिए विदेशी संस्थानों के साथ संस्थान स्तर के 52 समझौता ज्ञापनों और वैश्विक स्तर पर आयुष के प्रचार और प्रचार के लिए 39 देशों में 43 आयुष सूचना प्रकोष्ठों की स्थापना का समर्थन किया है। इसके अलावा, आयुष मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय आयुष फैलोशिप/छात्रवृत्ति कार्यक्रम के तहत भारत में मान्यता प्राप्त आयुष संस्थानों में आयुष पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए विदेशी नागरिकों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

*****